कैनेडा से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका

वसुधा

Year 16, Issue 61
Jan.-March, 2019

VASUDHA A CANADIAN PUBLICATION

EDITOR-PUBLISHER : Dr. Sneh Thakore - Awarded By The President Of India
Limka Book Record Holder

संपादन व प्रकाशन
डॉ. स्नेह ठाकुर
भारत के राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत
लिम्का बुक रिकॉर्ड होल्डर

वर्ष १६ - अंक ६१, जनवरी - मार्च २०१९

मेरे प्यारे भारत

बैराम हलिति

(मूल भाषा - रोमानी)

भावानुवाद : पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि

तुम मेरे हृदय की कम्पन हो
मेरी आत्मा हो
प्राचीनतम देश हो
विश्व की पुरातन संस्कृति को समाए
धन-धान्य सम्पन्न
मेरी पितृ-भूमि,
तुम नहीं जानती
अपने बिछुड़े लालों का
भारतवंशियों का दर्द
यानि हमारा दर्द
जो इम्यून कर गया है हमें
गैस चैम्बरों की तपन सहते-सहते
जिनमें भून दिये गए थे
हमारे पूर्वज
फ़ासिस्ट हिटलर द्वारा.
प्रत्येक रोमा का सपना होता है
की वह पितृ-ऋण से उऋण हो
पवित्र गंगा के देश
भारत की परिक्रमा कर.
पल-पल सोचते हैं हम
तुम्हारे बारे में
गीत गाते हैं तुम्हारे दुनियाँ-भर में.
बसे हो तुम
हिमालय से हिंदुकुश तक
हमारे प्राणों में.
मेरे भारत
तुम हृदय हो मेरा
अविनाशी आत्मा हो
और देखो मर-मर कर जीवित हैं
हम अपने कोसोव में आज भी!

वसुधा

सम्पादन व प्रकाशन : डॉ. स्नेह ठाकुर

(पोस्ट-डॉक्टरल फ़ेलोशिप अवार्डी)

भारत के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में "हिन्दी सेवी सम्मान" से सम्मानित

शीर्षक	रचयिता	पृष्ठ
सम्पादकीय		२
स्वागत है नव वर्ष तुम्हारा	रमेश जोशी	३
नव वर्ष	मदन लाल गुप्ता	४
तुम स्वयं दीपक बनो!	प्रो. गिरीश्वर मिश्र	७
मैं और तुम	डॉ. अजय श्रीवास्तव	९
अंधकार में प्रभाकुंज : स्वामी विवेकानंद	संतोष खन्ना	१०
ग़ज़ल	संजीव गौतम	१३
विदुषी माता मैत्रेयी	डॉ. अशोक आर्य	१४
ग़ज़ल	दयानंद पाण्डेय	१६
प्रेम की पराकाष्ठा	उपासना गौतम	१८
बड़प्पन	मनोज कुमार शुक्ल “मनोज”	१९
....कि जाने कैसी प्रीत लगाई!	अरुण तिवारी	२३
राष्ट्रीय एकता की प्राण - हिन्दी	सुशील शर्मा	२५
निश्चलता	मोहनजीत कुकरेजा	२९
इन्सान से इन्सान का हो भाईचारा यही पैगाम हमारा	अनिता शर्मा	३०
नेक कर्म	डॉ. शशि ऋषि	३२
हिन्दी अ से ह तक और हिन्दी में समाहित अध्यात्म, दिव्यता, दर्शन, योग, ज्ञान और विज्ञान	डॉ. मृदुल कीर्ति	३३
विश्वास है प्रार्थना	अजय जैन “विकल्प”	३७
जात्यांतरण	धर्मेन्द्र कुमार	३८
मेरी पसंद नहीं	अल्फ्रेड घेरे लिलिगेटो अनुवादक : डॉ. अमित सारवाल	४१
पर्दा है पर्दा	दिलीप कुमार सिंह	४२
मेरे प्यारे भारत (मूल भाषा - रोमानी)	बैराम हलिति भावानुवाद : पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह “शशि”	१अ
डॉ. स्नेह ठाकुर का रचना संसार		४४अ

रचनाओं में निहित विचार तथा मन्तव्य रचनाकारों के निजी विचार तथा मन्तव्य हैं। 'वसुधा' रचनाकारों के विचारों के लिए उत्तरदायी नहीं है। प्रकाशक की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाएगा।

रचनाएँ भेजने के लिए सम्पर्क पता :

16 Revlis Crescent, Toronto, Ontario M1V-1E9, Canada. TEL. 416-291-9534

वार्षिक शुल्क Annual subscription.....$25.00, भारत - रु. ६००.००

डाक द्वारा By Mail $35.00, International Mail $40.00

Website: http://www.Vasudha1.webs.com

e-mail: dr.snehthakore@gmail.com

सम्पादकीय

इस नव-वर्ष वसुधा अपने जीवन के सोलहवें वर्ष में पदार्पण कर रही है. इस बलखाती, इठलाती षोडशी को रचनाकारों और पाठकों ने अपने स्नेह से सींच कर उम्र के इस सुनहरे मुक़ाम पर पहुँचाया है जिसके लिए वह सभी की आभारी है और आशा करती है कि ज़िंदगी के हर पड़ाव पर उसे इसी प्रकार आप सबका आशीर्वाद प्राप्त होता रहेगा.

आगामी होली की गुलाल-भरी शुभ-कामनाएँ. होली जहाँ ईश्वर की सत्ता स्वीकार करने का त्योहार है कि हर विषम से विषम परिस्थिति में ईश्वर अपने भक्त की रक्षा करता है, विकट से विकट अवस्था में उसे सुरक्षित रखता है, होलिका-दहन व हिरण्यकशिपु-वध से बुराई का अंत कर, भगवान में परम आस्था रखने वाले अपने भक्त प्रह्लाद का मन सत्-चित्-आनंद से भर देता है, वहीं यह त्योहार अगली-पिछली वैमनस्यता भुला कर मित्रता का हाथ थामे स्वयं की व दूसरे की कालिमा, कलुषता मिटाकर सौहार्द्रपूर्ण भाव से एक-दूसरे पर सच्चिदानंद के शुभ रंगों की वर्षा करने की शिक्षा भी देता है. जब आप कलुषता की कालिमा को त्याग भाईचारे के पावन-पुनीत शुभ रंगों से दूसरे को प्लावित करते हैं तो उसके छींटे आप पर भी पड़ते हैं जो न केवल दूसरों के जीवन में वरन् आपके जीवन में भी खुशियों की बहार लाते हैं. आइए, इस भावाव्यक्ति के साथ हम होली का संकल्प लें और मानवता को आदर्श-प्रेम के रंग में रंग कर, सराबोर कर भारतीय होली का उत्कृष्ट शुभ संदेश विश्व में स्थापित करें. हम देश में रहें चाहे विदेश में, इतनी अमूल्य रत्न-जटित भारतीय संस्कृति जो हमें विरासत में मिली हैं, उसका प्रचार-प्रसार न करना आत्म-हनन होगा. वर्तमान व भावी पीढ़ी के लिए चाहे वह भारतीय हो या प्रवासी भारतीय, भारतीय संस्कृति की मशाल जलाये रखने के लिए हमें प्रतिबद्ध होना है. इस शुभ संकल्प से जुड़ी आप सबकी प्रतिबद्धता भारतीय संस्कारों के मानदण्डों को स्थापित कर, परस्पर सहृदयता एवं प्रेम भावना बढ़ा, जिस देश-प्रदेश में भी आप निवास करते हैं, उसे प्रेममय बना देगी, और अन्ततोगत्वा ऐसा सौहार्द्रपूर्ण वातावरण हर देश काल के लिए अनुकरणीय होगा, हर दृष्टि से सराहनीय होगा. इतिहास अतीत की व्याख्या है. साहित्य वर्तमान का दर्पण है और समाज का भविष्य निर्माता भी. सामाजिक एवं साहित्यिक गतिविधियों द्वारा ही हम, भारतीय समाज - आप्रवासी भारतीय समाज व भारतवंशियों का, न केवल वर्तमान उज्ज्वल बनाएँगे वरन् उज्ज्वल भविष्य की नींव, ठोस आधार-शिला का निर्माण भी करेंगे. ऐसी मेरी मान्यता है.

भारत के संसद भवन के भव्य केन्द्रीय कक्ष में संयोजक - माननीया सत्या बहिन, पूर्व सांसद राज्यसभा, अध्यक्ष, "ससंदीय हिन्दी परिषद्", माननीया संतोष खन्ना, महासचिव "विधि भारतीय परिषद्", एवं माननीया उर्मिल सत्यभूषण, अध्यक्ष, "परिचय साहित्य परिषद्" – द्वारा "संसदीय हिन्दी परिषद्" का गौरवशाली राष्ट्रभाषा उत्सव, पद्मभूषण डॉ. सुभाष कश्यप, पूर्व महासचिव लोकसभा, एवं भारत के प्रतिष्ठित संविधान विद्, की अध्यक्षता में एवं मुख्य अतिथि डॉ. सत्य नारायण जटिया, पूर्व केन्द्रीय मंत्री, राज्यसभा के उपसभापति एवं संसदीय राजसभा समिति के उपाध्यक्ष के सान्निद्ध्य में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ. गणमान्य विशिष्ट अतिथि थे- डॉ. रमा, प्राचार्य, हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय : डॉ. अवनीश कुमार, अध्यक्ष वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग एवं निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार : डॉ. रामशरण गौड़, अध्यक्ष, दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड : प्रो. डॉ. पूरन चंद टंडन, प्रो. हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय.

राष्ट्र भाषा महोत्सव के प्रति समर्पित ऐसे भव्य समारोह में स्वयं के लिए प्रदत्त "राष्ट्र भाषा गौरव सम्मान" हेतु श्रीमती संतोष खन्ना एवं सभी सम्बंधित आदरणीय एवं प्रियजनों की आभारी हूँ. सभी का हार्दिक धन्यवाद.

ईश्वर कृपा और आप सभी हितैषियों की शुभकामनाओं से मेरे उपन्यास "लोक-नायक राम" का चतुर्थ संस्करण प्रकाशित हो गया है एवं उपन्यास "दशानन रावण" प्रकाशनाधीन है.

नव वर्ष सभी के लिए मंगलमय हो. विश्व शांति की कामना लिए, सस्नेह, स्नेह ठाकुर

मेरी पसंद नहीं

अल्फ्रेड घेरे लिलिगेटो

अनुवादक : डॉ अमित सारवाल

मैंने नहीं याचना की इन्साफ की
ना ही विनती की तुम्हारी नरमी की.
मैंने नहीं अर्ज़ी दी पैदा होने की
विरासत में पाने की शहरी अवगुण.
मुझे नहीं मिला मौक़ा
रेंगने का, जमाने का आधिपत्य जीवन पे शैक्षणिक दृष्टि से
मुझे नहीं आगाह किया गया ख़तरे का
कि ज़िन्दगी मेरे लिये होगी दो दुनिया का सफर
मुझे जबरन स्वीकार करनी पड़ी
वो दुनिया जो नहीं थी वास्तव में मेरी.
किसकी पसंद है यह फिर
और किसका है यह अपराध?
तुम्हारा नहीं, मेरा नहीं,
फिर किसका?